

ओं नमः परमात्मने, श्री महागणपतये नमः,

श्री गुरुभ्यो नमः । हरिः ओं ॥

कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय आरण्यकम्

Aranyaka Index – Dasini wise

Version Notes:

This is the first Version 0.0 dated 31st Mar 2024.

1. Notify your corrections / suggestions etc to our email id vedavms@gmail.com

ACKNOWLEDGEMENT:

We hereby thank "**Sanatana Sampatti Foundation**", **Karnataka** for their tremendous contribution to generate this index. We hope, this index table will be useful to many veda students / learners to pepare for their gurukulam / paadashala exams.

Table 1: कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय आरण्यके

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|-----------|---|--|
| 1 | T.A.1.1.1 | भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः | |
| 2 | T.A.1.1.2 | अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च सह सञ्च-स्करर्द्धिया | |
| 3 | T.A.1.1.3 | अपाश्युष्णि-मपा रक्षः अपाश्युष्णि-मपा रघं | |
| 4 | T.A.1.2.1 | स्मृतिः प्रत्यक्ष-मैतिह्यं अनुमान-श्चतुष्टयं एतैरादित्य | |
| 5 | T.A.1.2.2 | तान्नद्योऽभि समायन्ति सोरुः सती | |
| 6 | T.A.1.2.3 | अणुभिश्च महद्भिश्च समारूढः प्रदृश्यते | |
| 7 | T.A.1.2.4 | उभयतः सप्तेन्द्रियाणि जल्पितं त्वेव | |
| 8 | T.A.1.3.1 | साकञ्जानाश् सप्तथमाहु-रेकजं षडुद्यमा ऋषयो | |
| 9 | T.A.1.3.2 | न हि प्रवेद सुकृतस्य | |
| 10 | T.A.1.3.3 | अमूश्च परिरक्षतः एता वाचः | |
| 11 | T.A.1.3.4 | ज्योतिषा ऽप्रतिख्येन सः विश्वरूपाणि | |
| 12 | T.A.1.4.1 | अक्षिदुःखोत्थितस्यैव विप्रसन्ने कनीनिके आङ्गे | |
| 13 | T.A.1.4.2 | अभिधून्वन्तो-ऽभिघ्नन्त इव वातवन्तो मरुद्गणाः | |
| 14 | T.A.1.4.3 | दुर्भिक्षं देवलोकेषु मनूनामुदकं गृहे | |
| 15 | T.A.1.5.1 | अति ताम्राणि वासाश्सि अष्टिवज्रि | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|-----------|---|--|
| 16 | T.A.1.5.2 | तस्येन्द्रो वम्रिरूपेण धनुर्ज्या-मछिनथ्स्वयं तदिन्द्रधनुरित्यज्यं | |
| 17 | T.A.1.6.1 | अत्यूर्द्धाक्षोऽतिरश्वात् शिशिरः प्रदृश्यते नैव | |
| 18 | T.A.1.6.2 | निजानुकामे न्यञ्जलिका अमी वाच-मुपासतामिति | |
| 19 | T.A.1.6.3 | अव द्रफ्सो अश्मतीमतिष्ठत् इयानः | |
| 20 | T.A.1.7.1 | आरोगो भ्राजः पटरः पतङ्गः | |
| 21 | T.A.1.7.2 | तस्मिन् राजान-मधिविश्रयेममिति ते अस्मै | |
| 22 | T.A.1.7.3 | आनुश्रविक एव नौ कश्यप | |
| 23 | T.A.1.7.4 | अमुत्रेतरे तस्मादिहा तप्त्रि तपाः | |
| 24 | T.A.1.7.5 | सप्त होतार ऋत्विजः देवा | |
| 25 | T.A.1.7.6 | अनु न जातमष्ट रोदसी | |
| 26 | T.A.1.8.1 | क्रेदमभ्रं निविशते कायश्च सम्वत्सरो | |
| 27 | T.A.1.8.2 | अभ्राण्यपः प्रपद्यन्ते विद्युत्सूर्ये समाहिता | |
| 28 | T.A.1.8.3 | व्यष्टभ्रा-द्रोदसी विष्णवेते दाधर्थ पृथिवी-मभितो | |
| 29 | T.A.1.8.4 | अग्रयो वायवश्चैव एतदस्य परायणं | |
| 30 | T.A.1.8.5 | अनाभोगाः परं मृत्युं पापाः | |
| 31 | T.A.1.8.6 | कश्यपा दुदिताः सूर्याः पापाच्चिघ्नन्ति | |
| 32 | T.A.1.8.7 | आशातिकाः क्रिमय इव ततः | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|---|--|
| 33 | T.A.1.8.8 | ऋषिर्ह दीर्घश्रुत्तमः इन्द्रस्य घर्मो | |
| 34 | T.A.1.9.1 | अग्निश्च जातवेदाश्च सहोजा अजिराप्रभुः | |
| 35 | T.A.1.9.2 | याश्च वासुकि वैद्युताः रजताः | |
| 36 | T.A.1.9.3 | य एवं वेद अथ | |
| 37 | T.A.1.9.4 | नैनं गरो हिनस्ति य | |
| 38 | T.A.1.9.5 | विद्युन् महसो धूपयः श्वापयो | |
| 39 | T.A.1.9.6 | उच्चैत्यव चाहभिः भूमिं पर्जन्या | |
| 40 | T.A.1.9.7 | ब्रह्मणा वीर्यावता शिवा नः | |
| 41 | T.A.1.10.1 | सहस्रवृदियं भूमिः परं व्योम | |
| 42 | T.A.1.10.2 | विश्वा हि माया अवथः | |
| 43 | T.A.1.10.3 | तिस्रः क्षपस्त्रिरहा ऽतिव्रजद्भिः नासत्या | |
| 44 | T.A.1.10.4 | अन्वेति तुग्रो वक्रियान्तं आयसूयान्थ | |
| 45 | T.A.1.10.5 | तयो रेतौ वथ्सा वहोरात्रे | |
| 46 | T.A.1.10.6 | ताम्रो अरुणः ता अविस्ृष्टौ | |
| 47 | T.A.1.10.7 | उष्मा च नीहारश्च वृत्रस्योष्मा | |
| 48 | T.A.1.11.1 | पवित्रवन्तः परिवाजमासते पितैषां प्रत्नो | |
| 49 | T.A.1.11.2 | ऋषयः सप्तात्रिश्च यत् सर्वेऽत्रयो | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|--|--|
| 50 | T.A.1.11.3 | धियो यो नः प्रचोदयात् | |
| 51 | T.A.1.11.4 | नपुंसकं पुमांश्च्यस्मि स्थावरोऽस्म्यथ जङ्गमः | |
| 52 | T.A.1.11.5 | यस्ता विजानाथ सवितुः पिताऽसत् | |
| 53 | T.A.1.11.6 | वीणा पण वलासितं मृतञ्जीवञ्च | |
| 54 | T.A.1.11.7 | सोऽजिह्वो असश्चत नैतमृषिं विदित्वा | |
| 55 | T.A.1.11.8 | नास्याक्षो यातु सज्जति यच्छ्रेतान् | |
| 56 | T.A.1.12.1 | आतनुष्व प्रतनुष्व उद्धमाधम सन्धम | |
| 57 | T.A.1.12.2 | एवमेतन्निबोधत आ मन्द्रै-रिन्द्र हरिभिः | |
| 58 | T.A.1.12.3 | निघृष्वै रसमायुतैः कालैर् हरित्वमापन्नैः | |
| 59 | T.A.1.12.4 | गौरावस्कन्दिन्न-हल्यायै जार कौशिक-ब्राह्मण गौतमब्रुवाण | |
| 60 | T.A.1.12.5 | उक्तं स्थानं प्रमाणञ्च पुर | |
| 61 | T.A.1.13.1 | अष्टयोनी-मष्टपुत्रां अष्टपत्नी-मिमां महीं अहं | |
| 62 | T.A.1.13.2 | अहं वेद न मे | |
| 63 | T.A.1.13.3 | परा मार्ताण्डमास्यत् सप्तभिः पुत्रै-रदितिः | |
| 64 | T.A.1.14.1 | योऽसौ तपन्नुदेति स सर्वेषां | |
| 65 | T.A.1.14.2 | मा मे प्रजाया मा | T.A.1.14.4 |
| 66 | T.A.1.14.3 | इमे मासा-श्चार्द्धमासाश्च सर्वेषां भूतानां | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|--|--|
| 67 | T.A.1.14.4 | मा मे प्रजाया मा | T.A.1.14.2 |
| 68 | T.A.1.15.1 | अथादित्यस्याष्ट पुरुषस्य वसूना मादित्यानां | |
| 69 | T.A.1.16.1 | आरोगस्य स्थाने स्वतेजसा भानि | |
| 70 | T.A.1.17.1 | अथ वायो-रेकादश-पुरुषस्यैकादश-स्त्रीकस्य प्रभ्राजमानानां रु- द्राणां | |
| 71 | T.A.1.17.2 | अवपतन्तानां रुद्राणां स्थाने स्वतेजसा | |
| 72 | T.A.1.18.1 | अथाग्नेरष्ट पुरुषस्य अग्नेः पूर्व-दिश्यस्य | |
| 73 | T.A.1.19.1 | दक्षिणपूर्व-स्यान्दिशि विसर्पी नरकः तस्मान्नः | |
| 74 | T.A.1.20.1 | इन्द्र घोषा वो वसुभिः | |
| 75 | T.A.1.21.1 | आपमापामपः सर्वाः अस्मा-दस्मादितोऽमुतः अग्निर्वायुश्च | |
| 76 | T.A.1.21.2 | देवीः पर्जन्य सूवरीः पुत्रवत्त्वाय | |
| 77 | | | |
| 78 | T.A.1.22.1 | योऽपां पुष्पं वेद पुष्पवान् | |
| 79 | T.A.1.22.2 | आयतनवान् भवति आपो वा | |
| 80 | T.A.1.22.3 | आपो वै वायोरायतनं आयतनवान् | |
| 81 | T.A.1.22.4 | आयतनवान् भवति य एवं | |
| 82 | T.A.1.22.5 | य एवं वेद योऽपामायतनं | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|-------------|---|--|
| 83 | T.A.1.22.6 | योऽपामायतनं वेद आयतनवान् भवति | |
| 84 | T.A.1.22.7 | आयतनवान् भवति सम्वत्सरो वा | |
| 85 | T.A.1.22.8 | इमे वै लोका अप्सु | |
| 86 | T.A.1.22.9 | पुष्करपर्णैः पुष्करदण्डैः पुष्करैश्च सःस्तीर्य | |
| 87 | T.A.1.22.10 | अथो आहुः सर्वेषु यश्क्रतुष्विति | |
| 88 | T.A.1.22.11 | नाचिकेत-मग्निञ्चिन्वानः प्राणान् प्रत्यक्षेण कमग्निञ्चिनुते | |
| 89 | T.A.1.22.12 | इमान् लोकान् प्रत्यक्षेण कमग्निञ्चिनुते | |
| 90 | T.A.1.23.1 | आपो वा इदमासन्थु सलिलमेव | |
| 91 | T.A.1.23.2 | सतो बन्धुमसति निरविन्दन् हृदि | |
| 92 | T.A.1.23.3 | ये नखाः ते वैखानसाः | |
| 93 | T.A.1.23.4 | नेत्यब्रवीत् पूर्वमेवाह-मिहासमिति तत्पुरुषस्य पुरुषत्वं | |
| 94 | T.A.1.23.5 | अञ्जलिना पुरस्ता-दुपादधात् एवा ह्येवेति | |
| 95 | T.A.1.23.6 | ततो वायुरुदतिष्ठत् सा प्रतीची | |
| 96 | T.A.1.23.7 | अथारुणः केतुरुपरिष्ठा-दुपादधात् एवा हि | |
| 97 | T.A.1.23.8 | आपो ह यद् बृहतीः | |
| 98 | T.A.1.23.9 | विधाय लोकान्, विधाय भूतानि | |
| 99 | T.A.1.24.1 | चतुष्टय्य आपो गृह्णाति चत्वारि | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|--|--|
| 100 | T.A.1.24.2 | कूप्या गृह्णाति ता दक्षिणत | |
| 101 | T.A.1.24.3 | ता उत्तरत उपदधाति ओजसा | |
| 102 | T.A.1.24.4 | असौ वै पल्वल्याः अमुष्यामेव | |
| 103 | T.A.1.25.1 | जानुदग्नी-मुत्तरवेदीङ्घात्वा अपां पूरयति अपां | |
| 104 | T.A.1.25.2 | तदवरुन्धे कूर्ममुपदधाति अपामेव मेधमवरुन्धे | |
| 105 | T.A.1.25.3 | यास्तिस्त्रः परमजाः इन्द्रघोषा वो | |
| 106 | T.A.1.26.1 | अग्निं प्रणीयोप-समाधाय तमभित एता | |
| 107 | T.A.1.26.2 | सत्रिय मग्निञ्चिन्वानः कमग्निञ्चिनुते सावित्र | |
| 108 | T.A.1.26.3 | उपानुवाक्य-माशु मग्निञ्चिन्वानः कमग्निञ्चिनुते इममारुण- केतुक | |
| 109 | T.A.1.26.4 | प्राजापत्यो वा एषोऽग्निः प्राजापत्याः | |
| 110 | T.A.1.26.5 | वृष्टिकामश्चिन्वीत आपो वै वृष्टिः | |
| 111 | T.A.1.26.6 | वज्रमेव भ्रातृव्येभ्यः प्रहरति स्तृणुत | |
| 112 | T.A.1.26.7 | अमृतं वा आपः अमृतस्या-नन्तरित्यै | |
| 113 | T.A.1.27.1 | इमा नुकं भुवना सीषधेम | |
| 114 | T.A.1.27.2 | मरीचयः स्वायंभुवाः ये शरीराण्य | |
| 115 | T.A.1.27.3 | देवानां पूरयोद्ध्या तस्याः हिरण्मयः | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|---|--|
| 116 | T.A.1.27.4 | विवेशापराजिता पराङ्गेत्य पराङ्गत्य ज्यामयी | |
| 117 | T.A.1.27.5 | यज्वानो येऽप्ययज्वनः स्वर्यन्तो नापेक्षन्ते | |
| 118 | T.A.1.27.6 | यमो ददात्व-वसानमस्मै नृ मुणन्तु | |
| 119 | T.A.1.28.1 | विशीर्ष्णीं गृद्ध-शीर्ष्णीञ्च अपेतो निर्ऋतिं | |
| 120 | T.A.1.29.1 | पर्जन्याय प्रगायत दिवस्पुत्राय मीढुषे | |
| 121 | T.A.1.30.1 | पुनःमामैत्विन्द्रियं पुनरायुः पुनःभगः पुनः | |
| 122 | T.A.1.31.1 | अद्भ्य-स्तिरोधा जायत तव वैश्रवणः | |
| 123 | T.A.1.31.2 | असाम सुमतौ यज्ञियस्य श्रियं | |
| 124 | T.A.1.31.3 | सर्वभूताधिपतये नम इति अथ | |
| 125 | T.A.1.31.4 | तिरोधाः स्वः तिरोधा भूर्भुवस्स्वः | |
| 126 | T.A.1.31.5 | अपि ब्राह्मणमुखीनाः तस्मिन्नहः काले | |
| 127 | T.A.1.31.6 | तस्मा इममग्र पिण्डञ्जुहोमि स | |
| 128 | T.A.1.32.1 | सम्वत्सरमेतद् व्रतञ्चरेत् द्वौ वा | |
| 129 | T.A.1.32.2 | असञ्चयवान् अग्रये वायवे सूर्याय | |
| 130 | T.A.1.32.3 | महानाम्नीभि-रुदकं सस्पर्श्य तमाचार्यो दद्यात् | |
| 131 | T.A.2.1.1 | सह वै देवानां चासुराणां | |
| 132 | T.A.2.2.1 | रक्षांसि हवा पुरोनुवाके तपोऽग्रमतिष्ठन्त | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|--|--|
| 133 | T.A.2.3.1 | यद्-देवा देवहेडनं देवहेळनं देवासश्चकृमा | |
| 134 | T.A.2.4.1 | यददीव्यन्नृणमहं बभूवादित्थु सन्वा संजगर | |
| 135 | T.A.2.5.1 | आयुष्टे विश्वतो दधदयमग्निर्वरेण्यः पुनस्ते | |
| 136 | T.A.2.6.1 | वैश्वानराय प्रतिवेदयामो यदीनृणः सङ्गरो | |
| 137 | T.A.2.7.1 | वातरशना ह वा ऋषयः | |
| 138 | T.A.2.8.1 | कूरमाण्डैर् जुहुयाद्-योऽपूत इव मन्येत | |
| 139 | T.A.2.9.1 | अजान्. ह वै पृथ्वीःस्तपस्यमानान् | |
| 140 | T.A.2.10.1 | पञ्च वा एते महायज्ञाः | |
| 141 | T.A.2.11.1 | ब्रह्मयज्ञेन यक्ष्यमाणः प्राच्यां दिशि | |
| 142 | T.A.2.12.1 | ग्रामे मनसा स्वाङ्ग्यायमधीयीत दिवा | |
| 143 | T.A.2.13.1 | मद्ध्यन्दिने प्रबलमधीयीतासौ खलु वावैष | |
| 144 | T.A.2.14.1 | तस्य वा एतस्य यज्ञस्य | T.A.2.15.1 |
| 145 | T.A.2.15.1 | तस्य वा एतस्य यज्ञस्य | T.A.2.14.1 |
| 146 | T.A.2.16.1 | रिच्यत इव वा एष | |
| 147 | T.A.2.17.1 | दुहे ह वा एष | |
| 148 | T.A.2.18.1 | कतिधाऽवकीर्णां प्रविशति चतुर्द्धेत्याहुर्-ब्रह्मवादिनो मरुतः | |
| 149 | T.A.2.19.1 | भूः प्रपद्ये भुवः प्रपद्ये | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|--|--|
| 150 | T.A.2.20.1 | नमः प्राच्यै दिशे याश्च | |
| 151 | T.A.3.1.1 | चित्तिः सुक् चित्तमाज्यम् वाग्वेदिः | |
| 152 | T.A.3.2.1 | पृथिवी होता द्यौरद्ध्युः रुद्रोऽग्नीत् | |
| 153 | T.A.3.3.1 | अग्निर् होता अश्विनाऽद्ध्यु त्वष्टाऽग्नीत् | |
| 154 | T.A.3.4.1 | सूर्य ते चक्षुः वातं | |
| 155 | T.A.3.5.1 | महाहविर होता सत्यहविरद्ध्युः अच्युतपाजा | |
| 156 | T.A.3.6.1 | वाग्घोता दीक्षा पत्नी वातोऽद्ध्युः | |
| 157 | T.A.3.7.1 | ब्राह्मण एकहोता स यज्ञः | |
| 158 | T.A.3.7.2 | स मे ददातु प्रजां | T.A.3.7.4 |
| 159 | T.A.3.7.3 | चन्द्रमाः षड्होता स ऋतून् | |
| 160 | T.A.3.7.4 | स मे ददातु प्रजां | T.A.3.7.2 |
| 161 | T.A.3.8.1 | अग्निर् यजुर्भिः सविता स्तोमैः | |
| 162 | T.A.3.8.2 | त्वष्टेद्धमेन विष्णुर् यज्ञेन वसव | |
| 163 | T.A.3.9.1 | सेनेन्द्रस्य धेना बृहस्पतेः पत्थ्या | |
| 164 | T.A.3.9.2 | वरुणस्य विराट् यज्ञस्य पङ्क्तिः | |
| 165 | T.A.3.10.1 | देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे | T.A.7.8.1 |
| 166 | T.A.3.10.2 | कामः प्रतिग्रहीता कामः समुद्रमाविश | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|-------------|--|--|
| 167 | T.A.3.10.3 | मनवे तल्पम् त्वष्ट्रेऽजाम् पूष्णेऽविम् | |
| 168 | T.A.3.10.4 | उत्तानायाङ्गीरसायानः वैश्वानराय रथम् वैश्वानरः | |
| 169 | T.A.3.10.5 | क इदं कस्मा अदात् | |
| 170 | T.A.3.11.1 | सुवर्णं घर्मं परिवेद वेनम् | |
| 171 | T.A.3.11.2 | अन्तः प्रविष्टः शास्ता जनानां | |
| 172 | T.A.3.11.3 | अमृतस्य प्राणं यश्मेतम् चतुरहोतृणामात्मानं | |
| 173 | T.A.3.11.4 | इन्द्रश् राजानश् सवितारमेतम् वायोरात्मानं | |
| 174 | T.A.3.11.5 | अमृतस्य पूर्णान्तामु कलां विचक्षते | |
| 175 | T.A.3.11.6 | इन्द्रो राजा जगतो य | |
| 176 | T.A.3.11.7 | अच्युतां बहुलाश् श्रियम् स | |
| 177 | T.A.3.11.8 | घृतं तेजो मधुमदिन्द्रियम् मय्ययमग्निर्दधातु | |
| 178 | T.A.3.11.9 | एको अश्वो वहति सप्तनामा | |
| 179 | T.A.3.11.10 | रोहिणीः पिङ्गला एकरूपाः क्षरन्तीः | |
| 180 | T.A.3.11.11 | हृदा पश्यन्ति मनसा मनीषिणः | |
| 181 | T.A.3.11.12 | प्रजापतिः प्रजया सम्विदानः वीतं | |
| 182 | T.A.3.11.13 | वायुस्ताश् अग्रे प्रमुमोक्तु देवः | |
| 183 | T.A.3.12.1 | सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|---|--|
| 184 | T.A.3.12.2 | पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं | |
| 185 | T.A.3.12.3 | यत्पुरुषेण हविषा देवा यश्मतन्वत | |
| 186 | T.A.3.12.4 | तेन देवा अयजन्त साद्भ्या | |
| 187 | T.A.3.12.5 | तस्मादश्वा अजायन्त ये के | |
| 188 | T.A.3.12.6 | ऊरू तदस्य यद्-वैश्यः पद्भ्यां | |
| 189 | T.A.3.12.7 | वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम् आदित्यवर्णं | |
| 190 | T.A.3.13.1 | अद्भ्यः सम्भूतः पृथिव्यै रसाच्च | |
| 191 | T.A.3.13.2 | तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम् | |
| 192 | T.A.3.14.1 | भर्ता सन् भ्रियमाणो बिभर्ति | |
| 193 | T.A.3.14.2 | उतो बहूनेकमहर्जहार अतन्द्रो देवः | |
| 194 | T.A.3.14.3 | त्वं यश्स्त्वमु वेवासि सोमः | |
| 195 | T.A.3.14.4 | तं मे देवा ब्रह्मणा | |
| 196 | T.A.3.15.1 | हरिश् हरन्तमनुयन्ति देवाः विश्वस्येशानं | |
| 197 | T.A.3.15.2 | प्रास्मा आशा अशृण्वन् कामेनाजनयन् | |
| 198 | T.A.3.16.1 | तरणिर् विश्वदर शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य | |
| 199 | T.A.3.17.1 | आ प्यायस्व मदिन्तम सोम | |
| 200 | T.A.3.18.1 | ईयुष्टे ये पूर्वतरामपश्यन् व्युच्छन्तीमुषसं | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|---|--|
| 201 | T.A.3.19.1 | ज्योतिष्मतीं त्वा सादयामि ज्योतिष्कृतं | |
| 202 | T.A.3.20.1 | प्रयासाय स्वाहाऽऽयासाय स्वाहा वियासाय | |
| 203 | T.A.3.21.1 | चित्तं सन्तानेन भवं यक्रा | |
| 204 | T.A.4.1.1 | परेयुवांसम् प्रवतो महीरनु बहुभ्यः | |
| 205 | T.A.4.1.2 | आयुर-विश्वायुः परिपासति त्वा पूषा | |
| 206 | T.A.4.1.3 | इयम् नारी पतिलोकम् वृणाना | |
| 207 | T.A.4.1.4 | इममग्ने चमसम् मा विजीह्वरः | |
| 208 | T.A.4.2.1 | य एतस्य पथो गोप्तरस्तेभ्यः | |
| 209 | T.A.4.3.1 | प्र केतुना बृहता भात्यग्निराविर्-विश्वानि | |
| 210 | T.A.4.3.2 | उरुणसा-वसुतृपा-बुलुम्बलौ यमस्य दूतौ चरतो | |
| 211 | T.A.4.3.3 | यद्वै देवस्य सवितुः पवित्रं | |
| 212 | T.A.4.4.1 | यम् ते अग्निममन्थाम वृषभायेव | |
| 213 | T.A.4.4.2 | अव सृज पुनरग्ने पितृभ्यो | |
| 214 | T.A.4.5.1 | आयातु देवः सुमनाभि-रूतिभिर्-यमो हवेह | |
| 215 | T.A.4.5.2 | योऽस्य कौष्ठ्य जगतः पार्थिवस्यैक | |
| 216 | T.A.4.5.3 | त्रिकद्रुकेभिः पतति षडुर्वी-रेकमिद्-बृहत् गायत्री | |
| 217 | T.A.4.6.1 | वैश्वानरे हविरिदम् जुहोमि साहस्र-मुथ्सं | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|---|--|
| 218 | T.A.4.6.2 | शुनम् वाहाः शुनम् नाराः | |
| 219 | T.A.4.6.3 | प्र वाता वान्ति पतयन्ति | |
| 220 | T.A.4.7.1 | उत्ते तन्नोमि पृथिवीम् त्वत्परीमम् | |
| 221 | T.A.4.7.2 | एषा ते यमसादने स्वधा | |
| 222 | T.A.4.7.3 | सवितैतानि शरीराणि पृथिव्यै मातुरुपस्थ | |
| 223 | T.A.4.8.1 | अपूपवान् घृतवाश्चरुरेह सीदतूत्तभ्रुवन् पृथिवीम् | |
| 224 | T.A.4.9.1 | एतास्ते स्वधा अमृताः करोमि | |
| 225 | T.A.4.9.2 | लोकम् पृण ता अस्य | |
| 226 | T.A.4.10.1 | आरोहतायुर्-जरसम् गृणाना अनुपूर्वम् यतमाना | |
| 227 | T.A.4.10.2 | इमे जीवा विमृतैराववर्-तिन्नभूद्-भद्रा देवहूतिम् | |
| 228 | T.A.4.11.1 | अप नः शोशुचदघमग्रे शुशुद्ध्या | |
| 229 | T.A.4.11.2 | त्वश् हि विश्वतोमुख विश्वतः | |
| 230 | T.A.4.12.1 | अपश्याम युवति-माचरन्तीम् मृताय जीवाम् | |
| 231 | T.A.5.1.1 | शन्नो मित्रः शं वरुणः | T.A.5.12.1 |
| 232 | T.A.5.2.1 | शीक्षां व्याख्यास्यामः वर्णः स्वरः | |
| 233 | T.A.5.3.1 | सह नौ यशः सह | |
| 234 | T.A.5.3.2 | वायुः सन्धानं इत्यधि लोकं | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|--|--|
| 235 | T.A.5.3.3 | अन्तेवास्युत्तररूपं विद्या सन्धिः प्रवचनं | |
| 236 | T.A.5.3.4 | अथाद्भ्यात्मं अधराहनुः पूर्व रूपं | |
| 237 | T.A.5.4.1 | य श्छन्दसा-मृषभो विश्वरूपः छन्दोभ्यो-ऽद्भ्यमृताथ् | |
| 238 | T.A.5.4.2 | कुर्वाणा चीर-मात्मनः वासाऽसि मम | |
| 239 | T.A.5.4.3 | यशो जनेऽसानि स्वाहा श्रेयान. | |
| 240 | T.A.5.5.1 | भू-भुव-स्सुव-रिति वा एता स्तिस्रो | |
| 241 | T.A.5.5.2 | मह इत्यादित्यः आदित्येन वाव | |
| 242 | T.A.5.5.3 | मह इति ब्रह्म ब्रह्मणा | |
| 243 | T.A.5.6.1 | स य एषोऽन्तर्-हृदय आकाशः | |
| 244 | T.A.5.6.2 | सुवरित्यादित्ये मह इति ब्रह्मणि | |
| 245 | T.A.5.7.1 | पृथिव्यन्तरिक्षं द्यौर-दिशोऽवान्तरदिशाः अग्निर्-वायु-रादित्य- श्चन्द्रमा नक्षत्राणि | |
| 246 | T.A.5.8.1 | ओ-मिति ब्रह्म ओ-मितीदः सर्वं | |
| 247 | T.A.5.9.1 | ऋतं च स्वाद्भ्याय प्रवचने | |
| 248 | T.A.5.10.1 | अहं वृक्षस्य रेरिवा कीर्तिः | |
| 249 | T.A.5.11.1 | वेदमनूच्या- ऽचार्योन्तेवासिन-मनुशास्ति सत्यं वद | |
| 250 | T.A.5.11.2 | देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यं मातृदेवो | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|---|--|
| 251 | T.A.5.11.3 | नो इतराणि ये के | |
| 252 | T.A.5.11.4 | ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर.शिनः | |
| 253 | T.A.5.11.5 | तथा तेषु वर्तेथाः एष | |
| 254 | T.A.5.12.1 | शन्नो मित्रः शंवरुणः | T.A.5.1.1 |
| 255 | T.A.5.13.1 | सह ना ववतु सह | |
| 256 | T.A.5.14.1 | ब्रह्मविदाप्रोति परं तदेषाऽभ्युक्ता सत्यं | |
| 257 | T.A.5.14.2 | अन्नाद्वै प्रजाः प्रजायन्ते याः | |
| 258 | T.A.5.14.3 | प्राणं देवा अनुप्राणन्ति मनुष्याः | |
| 259 | T.A.5.14.4 | यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य | T.A.5.14.9 |
| 260 | T.A.5.14.5 | विज्ञानं यज्ञं तनुते कर्माणि | |
| 261 | T.A.5.14.6 | असन्नेव स भवति असद् | |
| 262 | T.A.5.14.7 | असद्वा इदमग्र आसीत् ततो | |
| 263 | T.A.5.14.8 | भीषाऽस्मा-द्वातः पवते भीषोदेति सूर्यः | |
| 264 | T.A.5.14.9 | यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य | T.A.5.14.4 |
| 265 | T.A.5.15.1 | भृगुर्वै वारुणिः वरुणं पितर-मुपससार | |
| 266 | T.A.5.15.2 | अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात् अन्नाद्भ्येव | |
| 267 | T.A.5.15.3 | प्राणो ब्रह्मेति व्यजानात् प्राणाद्भ्येव | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|---|--|
| 268 | T.A.5.15.4 | मनो ब्रह्मेति व्यजानात् मनसो | |
| 269 | T.A.5.15.5 | विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजानात् विज्ञाना-द्ध्येव | |
| 270 | T.A.5.15.6 | आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात् आनन्दा-द्ध्येव-खल्विमानि | |
| 271 | T.A.5.15.7 | अन्नं न निन्द्यात् तद् | |
| 272 | T.A.5.15.8 | अन्नं न परिचक्षीत तद् | |
| 273 | T.A.5.15.9 | अन्नं बहु कुर्वीत तद् | |
| 274 | T.A.6.1.1 | अंभस्य पारे भुवनस्य मद्ध्ये | |
| 275 | T.A.6.1.2 | तदेवर्त्तं तदु सत्यमाहु-स्तदेव ब्रह्म | |
| 276 | T.A.6.1.3 | न सदंशे तिष्ठति रूपमस्य | |
| 277 | T.A.6.1.4 | त्रीणि पदा निहिता गुहासु | |
| 278 | T.A.6.1.5 | पशूश्च मह्यमावह जीवनञ्च दिशो | |
| 279 | T.A.6.1.6 | तन्नो नन्दिः प्रचोदयात् तत्पुरुषाय | |
| 280 | T.A.6.1.7 | तन्नो नारसिंहः प्रचोदयात् भास्कराय | |
| 281 | T.A.6.1.8 | एवा नो दूर्वे प्रतनु | |
| 282 | T.A.6.1.9 | मृत्तिके प्रतिष्ठिते सर्वं तन्मे | |
| 283 | T.A.6.1.10 | ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्-विसीमतः | |
| 284 | T.A.6.1.11 | स्वस्ति नो मघवा करोतु | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|---|--|
| 285 | T.A.6.1.12 | महेरणाय चक्षसे यो वः | |
| 286 | T.A.6.1.13 | यदपां क्रूरं यदमेद्ध्यं यदशान्तं | |
| 287 | T.A.6.1.14 | समुद्रा-दर्णवा-दधि सम्वथ्सरो अजायत अहोरात्राणि | |
| 288 | T.A.6.1.15 | स नः सुवः सं | |
| 289 | T.A.6.2.1 | जातवेदसे सुनवाम सोम-मरातीयतो निदहाति | |
| 290 | T.A.6.3.1 | भूरन्न-मग्रये पृथिव्यै स्वाहा , | |
| 291 | T.A.6.4.1 | भूरग्रये पृथिव्यै स्वाहा, भुवो | |
| 292 | T.A.6.5.1 | भूरग्रये च पृथिव्यै च | |
| 293 | T.A.6.6.1 | पाहि नो अग्र एनसे | |
| 294 | T.A.6.7.1 | पाहि नो अग्र एकया | |
| 295 | T.A.6.8.1 | यश्छन्दसा-मृषभो विश्वरूप-श्छन्दोभ्य श्छन्दाऽस्या विवेश | |
| 296 | T.A.6.9.1 | नमो ब्रह्मणे धारणं मे | |
| 297 | T.A.6.10.1 | ऋतं तपः सत्यं तपः | |
| 298 | T.A.6.11.1 | यथा वृक्षस्य सपुंष्पितस्य दूराद् | |
| 299 | T.A.6.12.1 | अणो-रणीयान् महतो महीया-नात्मा गुहायां | |
| 300 | T.A.6.12.2 | हःसः शुचिषद् वसु-रन्तरिक्ष-सद्भोता वेदिष-दतिथिर्-दुरोणसत् | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|--|--|
| 301 | T.A.6.12.3 | त्रिधा हितं पणिभिर् गुह्यमानं | |
| 302 | T.A.6.13.1 | सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्व | |
| 303 | T.A.6.13.2 | अन्तर् बहिश्च तथ् सर्वं | |
| 304 | T.A.6.14.1 | आदित्यो वा एष एतन् | |
| 305 | T.A.6.15.1 | आदित्यो वै तेज ओजो | |
| 306 | T.A.6.16.1 | निधनपतये नमः निधनपतान्तिकाय नमः | |
| 307 | T.A.6.16.2 | भवाय नमः भवलिङ्गाय नमः | |
| 308 | T.A.6.17.1 | सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै | |
| 309 | T.A.6.18.1 | वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः | |
| 310 | T.A.6.19.1 | अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः | |
| 311 | T.A.6.20.1 | तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि | |
| 312 | T.A.6.21.1 | ईशानः सर्वविद्याना- मीश्वरः सर्वभूतानां | |
| 313 | T.A.6.22.1 | नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय | |
| 314 | T.A.6.23.1 | ऋतश्च सत्यं परं ब्रह्म | |
| 315 | T.A.6.24.1 | सर्वो वै रुद्रस्तस्मै रुद्राय | |
| 316 | T.A.6.25.1 | कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टमाय तव्यसे | |
| 317 | T.A.6.26.1 | यस्य वै कङ्कत्यग्नि-होत्रहवणी भवति | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|--|--|
| 318 | T.A.6.27.1 | ठिस् एणन्सिओन् इस् अप्पेअरिन्ग् | |
| 319 | T.A.6.28.1 | अदितिर्-देवा गन्धर्वा मनुष्याः पितरो-ऽसुरा-स्तेषां | |
| 320 | T.A.6.29.1 | आपो वा इदं सर्वं | |
| 321 | T.A.6.30.1 | आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी | |
| 322 | T.A.6.31.1 | अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च | |
| 323 | T.A.6.32.1 | सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च | |
| 324 | T.A.6.33.1 | ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म अग्निर्देवता ब्रह्म | |
| 325 | T.A.6.34.1 | आयातु वरदा देवी अक्षरं | |
| 326 | T.A.6.35.1 | ओजोऽसि सहोऽसि बलमसि भ्राजोऽसि | |
| 327 | T.A.6.36.1 | उत्तमे शिखरे जाते भूम्यां | |
| 328 | T.A.6.37.1 | घृणिः सूर्य आदित्यो न | |
| 329 | T.A.6.38.1 | ब्रह्म मेतु मां मधु | |
| 330 | T.A.6.39.1 | ब्रह्म मेधया मधु मेधया | |
| 331 | T.A.6.40.1 | ब्रह्म मेधवा मधु मेधवा | |
| 332 | T.A.6.41.1 | मेधादेवी जुषमाणा न आगाद् | |
| 333 | T.A.6.42.1 | मेधां म इन्द्रो ददातु | |
| 334 | T.A.6.43.1 | आमां मेधा सुरभिर् विश्वरूपा | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|--|--|
| 335 | T.A.6.44.1 | मयि मेधां मयि प्रजां | |
| 336 | T.A.6.45.1 | अपैतु मृत्यु-रमृतन्न आगन् वैवस्वतो | |
| 337 | T.A.6.46.1 | परं मृत्यो अनु परेहि | |
| 338 | T.A.6.47.1 | वातं प्राणं मनसा न्वारभामहे | |
| 339 | T.A.6.48.1 | अमुत्र भूयादध यद्यमस्य बृहस्पते | |
| 340 | T.A.6.49.1 | हरिः हरन्त- मनुयन्ति देवा | |
| 341 | T.A.6.50.1 | शल्लकैरग्नि-मिन्धान उभौ लोकौ सनेमहं | |
| 342 | T.A.6.51.1 | मा छिदो मृत्यो मा | |
| 343 | T.A.6.52.1 | मा नो महान्तमुत मा | |
| 344 | T.A.6.53.1 | मा नस्तोके तनये मा | |
| 345 | T.A.6.54.1 | प्रजापते न त्वदेता-न्यन्यो विश्वा | |
| 346 | T.A.6.55.1 | स्वस्तिदा विशस्पतिर् वृत्रहा विमृधो | |
| 347 | T.A.6.56.1 | त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं | |
| 348 | T.A.6.57.1 | ये ते सहस्रमयुतं पाशा | |
| 349 | T.A.6.58.1 | मृत्यवे स्वाहा मृत्यवे स्वाहा | |
| 350 | T.A.6.59.1 | देवकृतस्यैनसो-ऽवयजनमसि स्वाहा मनुष्यकृतस्यैनसो ऽव- यजनमसि | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|--|--|
| 351 | T.A.6.60.1 | यद्वो देवाश्चकृम जिह्वया गुरुमनसो | |
| 352 | T.A.6.61.1 | कामोऽकार्षीन् नमो नमः कामोऽकार्षीत् | |
| 353 | T.A.6.62.1 | मन्युरकार्षीन् नमो नमः मन्युरकार्षीन् | |
| 354 | T.A.6.63.1 | तिलाञ्जुहोमि सरसाः सपिष्टान् गन्धार | |
| 355 | T.A.6.64.1 | तिलाः कृष्णा-स्तिलाः श्वेता-स्तिलाः सौम्या | |
| 356 | T.A.6.65.1 | प्राणापान-व्यानोदान-समाना मे शुद्ध्यन्तां ज्योति | |
| 357 | T.A.6.66.1 | पृथिव्याप स्तेजो वायु-राकाशा मे | |
| 358 | T.A.6.67.1 | अग्रये स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः | |
| 359 | T.A.6.67.2 | रक्षोदेवजनेभ्यः स्वाहा गृह्याभ्यः स्वाहा | |
| 360 | T.A.6.67.3 | दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा | |
| 361 | T.A.6.67.4 | देवेभ्यः स्वाहा पितृभ्यः स्वधाऽस्तु | |
| 362 | T.A.6.68.1 | ओं तद् ब्रह्म ओं | |
| 363 | T.A.6.69.1 | श्रद्धायां प्राणे निविष्टोऽमृतं जुहोमि | |
| 364 | T.A.6.70.1 | श्रद्धायां प्राणे निविश्याऽमृतं हुतं | |
| 365 | T.A.6.71.1 | अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽङ्गुष्ठञ्च समाश्रितः ईशः | |
| 366 | T.A.6.72.1 | वाङ्ग आसन्न नसोः प्राणः | |
| 367 | T.A.6.73.1 | वयः सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं प्रिय | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|---|--|
| 368 | T.A.6.74.1 | प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मा | |
| 369 | T.A.6.75.1 | नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युर्मे | |
| 370 | T.A.6.76.1 | त्वमग्ने द्युभि-स्त्वमाशु-शुक्षणि-स्त्वमद्भ्य-स्त्वमश्मनस्परि त्वं वनेभ्य-स्त्वमोषधीभ्य-स्त्वं | |
| 371 | T.A.6.77.1 | शिवेन मे सन्तिष्ठस्व स्योनेन | |
| 372 | T.A.6.78.1 | सत्यं परं परं सत्यं | |
| 373 | T.A.6.79.1 | प्राजापत्यो हारुणिः सुपर्णेयः प्रजापतिं | |
| 374 | T.A.6.80.1 | तस्यैवं विदुषो यज्ञस्यात्मा यजमानः-श्रद्धापत्नी | |
| 375 | T.A.7.1.1 | नमो वाचे या चोदिता | |
| 376 | T.A.7.2.1 | युञ्जते मन उत युञ्जते | |
| 377 | T.A.7.2.2 | देवयन्तस्त्वेमहे उप प्रयन्तु मरुतः | |
| 378 | T.A.7.2.3 | मखाय त्वा मखस्य त्वा | T.A.7.2.4 T.A.7.2.5 |
| 379 | T.A.7.2.4 | मखाय त्वा मखस्य त्वा | T.A.7.2.3 T.A.7.2.5 |
| 380 | T.A.7.2.5 | मखाय त्वा मखस्य त्वा | T.A.7.2.3 T.A.7.2.4 |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|-----------|--|--|
| 381 | T.A.7.2.6 | यज्ञस्य पदे स्थः गायत्रेण | |
| 382 | T.A.7.3.1 | वृष्णो अश्वस्य निष्पदसि वरुणस्त्वा | |
| 383 | T.A.7.3.2 | मित्रस्य चरुषणीधृतः श्रवो देवस्य | |
| 384 | T.A.7.3.3 | ऊर्द्ध्वस्तिष्ठ ध्रुवस्त्वम् सूर्यस्य त्वा | |
| 385 | T.A.7.4.1 | ब्रह्मन् प्रवःग्येण प्रचरिष्यामः होतः | |
| 386 | T.A.7.5.1 | ब्रह्मन् प्रचरिष्यामः होतर् घर्ममभिष्टुहि | |
| 387 | T.A.7.5.2 | पृथिवीं तपसस्त्रायस्व अर्चिरसि शोचिरसि | |
| 388 | T.A.7.5.3 | अनाधृष्या पुरस्तात् अग्नेराधिपत्ये आयुर्मे | |
| 389 | T.A.7.5.4 | मित्रावरुणयोराधिपत्ये श्रोत्रम् मे दाः | |
| 390 | T.A.7.5.5 | सूपसदा मे भूया मा | |
| 391 | T.A.7.5.6 | सम्मा असि विमा असि | |
| 392 | T.A.7.5.7 | विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि विश्वा | |
| 393 | T.A.7.6.1 | दश प्राचीर्दश भासि दक्षिणा | |
| 394 | T.A.7.6.2 | द्युतानस्त्वा मारुतो मरुद्भिरुत्तरतो रोचयत्वानुष्टुभेन | |
| 395 | T.A.7.6.3 | मयि रुक् दश पुरस्ताद्-रोचसे | |
| 396 | T.A.7.7.1 | अपश्यङ्गोपामनिपद्यमानम् आ च परा | |
| 397 | T.A.7.7.2 | स्वाहा समग्निस्तपसा गत सम् | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|---|--|
| 398 | T.A.7.7.3 | ऊर्द्धमिम-मद्धरङ्गधि दिवि देवेषु होत्रा | |
| 399 | T.A.7.7.4 | गर्भो देवानाम् पिता मतीनाम् | |
| 400 | T.A.7.7.5 | अन्तरिक्षप्र उरोर्वरीयान् अशीमहि त्वा | |
| 401 | T.A.7.8.1 | देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे | T.A.3.10.1 |
| 402 | T.A.7.8.2 | अदित्या उष्णीषमसि वायुरस्यैडः पूषा | |
| 403 | T.A.7.8.3 | घर्माय शिःष बृहस्पतिस्त्वोपसीदतु दानवः | |
| 404 | T.A.7.8.4 | गायत्रोऽसि त्रैष्टुभोऽसि जागतमसि सहोर्जो | |
| 405 | T.A.7.8.5 | अन्तरिक्षेण त्वोपयच्छामि देवानां त्वा | |
| 406 | T.A.7.9.1 | समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा | |
| 407 | T.A.7.9.2 | बृहस्पतये त्वा विश्वदेव्यावते स्वाहा | |
| 408 | T.A.7.9.3 | अहर्-दिवाभि-रूतिभिः अनु वान् द्यावापृथिवी | |
| 409 | T.A.7.9.4 | दिवि धा इमं यज्ञम् | |
| 410 | T.A.7.10.1 | इषे पीपिहि ऊर्जे पीपिहि | |
| 411 | T.A.7.10.2 | यजमानाय पीपिहि मह्यञ्ज्यैष्ठ्याय पीपिहि | |
| 412 | T.A.7.10.3 | अमुष्य त्वा प्राणे सादयामि | |
| 413 | T.A.7.10.4 | अहर् ज्योतिः केतुना जुषताम् | |
| 414 | T.A.7.10.5 | एषा ते अग्ने समित् | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|--|--|
| 415 | T.A.7.10.6 | पिता नोऽसि मा मा | |
| 416 | T.A.7.11.1 | घर्म या ते दिवि | T.A.8.9.1 |
| 417 | T.A.7.11.2 | घर्म या ते पृथिव्यां | |
| 418 | T.A.7.11.3 | वयमनुक्रामाम सुविताय नव्यसे ब्रह्मणस्त्वा | |
| 419 | T.A.7.11.4 | शिशुर्-जनधायाः शञ्च वक्षि परि | |
| 420 | T.A.7.11.5 | रन्तिर्-नामासि दिव्यो गन्धर्वः तस्य | |
| 421 | T.A.7.11.6 | व्यसौ योऽस्मान् द्वेष्टि यञ्च | |
| 422 | T.A.7.11.7 | नमस्ते अस्तु मा मा | |
| 423 | T.A.7.11.8 | धियो हिन्वानो धिय इन्नो | |
| 424 | T.A.7.11.9 | दुर्मित्रास्तस्मै भूयासुः योऽस्मान् द्वेष्टि | |
| 425 | T.A.7.12.1 | महीनाम् पयोऽसि विहितं देवत्रा | |
| 426 | T.A.7.13.1 | अस्कान् द्यौः पृथिवीम् अस्कानृषभो | |
| 427 | T.A.7.14.1 | या पुरस्ताद् विद्युदापतत् तान्त | |
| 428 | T.A.7.15.1 | प्राणाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा | |
| 429 | T.A.7.16.1 | पूष्णे स्वाहा पूष्णे शरसे | |
| 430 | T.A.7.17.1 | उदस्य शुष्माद् भानुर्नार्त बिभर्ति | |
| 431 | T.A.7.18.1 | यास्ते अग्न आर्द्रा योनयो | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|---|--|
| 432 | T.A.7.19.1 | अग्निरसि वैश्वानरोऽसि सम्वत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसि | |
| 433 | T.A.7.20.1 | भूर्भुवस्सुवः ऊर्द्ध ऊ षुण | |
| 434 | T.A.7.20.2 | निष्कर्ता विहुतम् पुनः पुनरूर्जा, | |
| 435 | T.A.7.20.3 | उप नो मित्रावरुणाविहावतम् अन्वादीद्ध्याथामिह | |
| 436 | T.A.7.21.1 | भूर्भुवस्सुवः मयि त्यदिन्द्रियम् महत् | |
| 437 | T.A.7.22.1 | यास्ते अग्ने घोरास्तनुवः क्षुच्च | |
| 438 | T.A.7.23.1 | स्त्रिक्च स्त्रीहितिश्च स्त्रिहितिश्च उष्णा | |
| 439 | T.A.7.24.1 | धुनिश्च ध्वान्तश्च ध्वनश्च ध्वनयश्च | |
| 440 | T.A.7.25.1 | उग्रश्च धुनिश्च ध्वान्तश्च ध्वनश्च | |
| 441 | T.A.7.26.1 | अहोरात्रे त्वोदीरयताम् अर्द्धमासास्त्वोदीं जयन्तु | |
| 442 | T.A.7.27.1 | खट् फट् जहि छिन्धी | |
| 443 | T.A.7.28.1 | विगा इन्द्र विचरन्थु स्पाशयस्व | |
| 444 | T.A.7.30.1 | यदेतद्-वृकसो भूत्वा वाग् देव्यभिरायसि | |
| 445 | T.A.7.31.1 | यदीषितो यदि वा स्वकामी | |
| 446 | T.A.7.32.1 | दीर्घमुखि दुरहणु मा स्म | |
| 447 | T.A.7.33.1 | इत्थादुलूक आपप्तत् हिरण्याक्षो अयोमुखः | |
| 448 | T.A.7.34.1 | यदेतद् भूतान्यन्वाविश्य दैवीं वाचं | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|---|--|
| 449 | T.A.7.35.1 | प्रसार्य सक्थ्यौ पतसि सव्यमक्षि | |
| 450 | T.A.7.36.1 | अत्रिणा त्वा क्रिमे हन्मि | |
| 451 | T.A.7.37.1 | आहरावद्य शृतस्य हविषो यथा | |
| 452 | T.A.7.38.1 | ब्रह्मणा त्वा शपामि ब्रह्मणस्त्वा | |
| 453 | T.A.7.39.1 | उत्तुद शिमिजावरि तल्पेजे तल्प | |
| 454 | T.A.7.40.1 | भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवः भुवोऽद्वायि | |
| 455 | T.A.7.41.1 | पृथिवी समित् तामग्निः समिन्धे | |
| 456 | T.A.7.41.2 | तां वायुः समिन्धे सा | |
| 457 | T.A.7.41.3 | साऽऽदित्यश् समिन्धे तामहश् समिन्धे | |
| 458 | T.A.7.41.4 | तच्छकेयं तन्मे राद्ध्यताम् वायो | |
| 459 | T.A.7.41.5 | वर्चसा श्रिया यशसा ब्रह्मवर्चसेन | |
| 460 | T.A.7.41.6 | यशसा ब्रह्मवर्चसेन अन्नाद्येन समिन्तां | |
| 461 | T.A.7.41.7 | अन्नाद्येन समिन्ताश् स्वाहा प्राजापत्या | |
| 462 | T.A.7.42.1 | शन्नो वातः पवताम् मातरिश्वा | |
| 463 | T.A.7.42.2 | दक्षम् मे अन्य आवातु | |
| 464 | T.A.7.42.3 | द्युभिरक्तुभिः परिपात-मस्मानरिष्टेभि-रश्विना सौभगेभिः तन्नो | |
| 465 | T.A.7.42.4 | शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|--|--|
| 466 | T.A.7.42.5 | आपो जनयथा च नः | |
| 467 | T.A.7.42.6 | य उदगान् महतोऽर्णवाद्-विभ्राजमानः सरिरस्य | |
| 468 | T.A.8.1.1 | देवा वै सत्रमासत ऋद्धिपरिमितम् | |
| 469 | T.A.8.1.2 | तेषाम् मखं वैष्णवं यश | |
| 470 | T.A.8.1.3 | तमेकः सन्तम् बहवो नाभ्यधृष्णुवन् | |
| 471 | T.A.8.1.4 | तथ् स्मयाकानाः स्मयाकत्वम् तस्माद्-दीक्षितेनापिगृह्य | |
| 472 | T.A.8.1.5 | वारेवृतः ह्यासाम् तस्य ज्यामप्यादन् | |
| 473 | T.A.8.1.6 | यदस्याः समभरन् तथ् सम्राज्ञः | |
| 474 | T.A.8.1.7 | भिषजौ वै स्थः इदं | |
| 475 | T.A.8.2.1 | सावित्रम् जुहोति प्रसूत्यै चतुर्गृहीतेन | |
| 476 | T.A.8.2.2 | देवतायै वषट्काराय यच्चतुर्गृहीतम् जुहोति | |
| 477 | T.A.8.2.3 | यज्ञपरुरन्तरियात् यजुरेव वदेत् न | |
| 478 | T.A.8.2.4 | स खदिरोऽभवत् यः पशून् | |
| 479 | T.A.8.2.5 | तेजसैव यज्ञस्य शिरः सम्भरति | |
| 480 | T.A.8.2.6 | अद्धरकृद्-देवेभ्य इत्याह यज्ञो वा | |
| 481 | T.A.8.2.7 | पाङ्गो हि यज्ञः देवा | |
| 482 | T.A.8.2.8 | त्रिरुहरति त्रय इमे लोकाः | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|---|--|
| 483 | T.A.8.2.9 | यद्-वल्मीकम् यद्-वल्मीकवपा सम्भारो भवति | |
| 484 | T.A.8.2.10 | तन्नाद्धियत स पूतीकस्तम्बे पराक्रमत | |
| 485 | T.A.8.2.11 | तमेवावरुन्धे पञ्चैते सम्भारा भवन्ति | |
| 486 | T.A.8.2.12 | आरण्याः पशवः कनीयाःसः शुचा | |
| 487 | T.A.8.2.13 | तेज एवास्मिन् दधाति मधु | |
| 488 | T.A.8.3.1 | परिश्रिते करोति ब्रह्मवर्चसस्य परिगृहीत्यै | |
| 489 | T.A.8.3.2 | तस्मान्नान्तराय्यम् आत्मनो गोपीथाय वेणुना | |
| 490 | T.A.8.3.3 | तस्मादेवमाह यज्ञस्य पदे स्थ | |
| 491 | T.A.8.3.4 | वीर्यम् वै छन्दाःसि वीर्येणैवैनम् | |
| 492 | T.A.8.3.5 | अपरिमितम् करोति अपरिमितस्यावरुद्ध्यै परिग्रीवम् | |
| 493 | T.A.8.3.6 | छन्दोभिरेवैनम् धूपयति अर्चिषे त्वा | |
| 494 | T.A.8.3.7 | तस्मादग्निः सर्वा दिशोऽनु विभाति | |
| 495 | T.A.8.3.8 | दिशो भूतिः इमानेवास्मै लोकान् | |
| 496 | T.A.8.3.9 | आच्छृणोति देवत्राऽकः अजक्षीरेणाच्छृणोति परमं | |
| 497 | T.A.8.4.1 | ब्रह्मन् प्रचरिष्यामो होतर्-घर्ममभिष्टुहीत्याह एष | |
| 498 | T.A.8.4.2 | अभिपूर्वम् प्रोक्षति अभिपूर्व-मेवास्मिन्-तेजो दधाति | |
| 499 | T.A.8.4.3 | गायत्रो हि प्राणः प्राणमेव | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|--|--|
| 500 | T.A.8.4.4 | यत् प्रवर्ग्यः ऊङ्मुञ्जाः यन् | |
| 501 | T.A.8.4.5 | तेजसैवैनमनक्ति पृथिवीम् तपसस्त्रायस्वेति हिरण्यमुपास्यति | |
| 502 | T.A.8.4.6 | अर्चिरसि शोचिरसीत्याह तेज एवास्मिन् | |
| 503 | T.A.8.4.7 | अनाधृष्या पुरस्तादिति यदेतानि यजूष्याह | |
| 504 | T.A.8.4.8 | मनोरश्वाऽसि भूरिपुत्रेतीमा-मभिमृशति इयं वै | |
| 505 | T.A.8.4.9 | स्वाहा मरुद्भिः परिश्रयस्वेत्याह अमुमेवादित्यं | |
| 506 | T.A.8.4.10 | द्वादश मासाः सम्वत्सरः सम्वत्सरमेवावरुन्धे | |
| 507 | T.A.8.4.11 | स्तौत्येवैनमेतत् गायत्रमसि त्रैष्टुभमसि जागतमसीति | |
| 508 | T.A.8.4.12 | अथो रक्षसामपहत्यै त्रिः पुनः | |
| 509 | T.A.8.4.13 | ततो वै स दुश्चर्माऽभवत् | |
| 510 | T.A.8.5.1 | अग्निष्ठा वसुभिः पुरस्ताद्-रोचयतु गायत्रेण | |
| 511 | T.A.8.5.2 | स मा रुचितो रोचयेत्याह | |
| 512 | T.A.8.5.3 | रोचितस्त्वम् देव घर्म देवेष्वसीत्याह | |
| 513 | T.A.8.6.1 | शिरो वा एतद्-यज्ञस्य यत् | |
| 514 | T.A.8.6.2 | ऋतुभ्य एव यज्ञस्य शिरोऽवरुन्धे | |
| 515 | T.A.8.6.3 | अग्निष्टोमे प्रवृणक्ति एतावान्, वै | |
| 516 | T.A.8.6.4 | पृष्ठानि वा अच्युतञ्च्यावयन्ति पृष्ठैरेवास्मा | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|---|--|
| 517 | T.A.8.6.5 | न ह्येष निपद्यते आ | |
| 518 | T.A.8.6.6 | गैष्मावेवास्मा ऋतू कल्पयति समग्रिरग्निना | |
| 519 | T.A.8.6.7 | दिवि देवेषु होत्रा यच्छेत्याह | |
| 520 | T.A.8.6.8 | गर्भो देवानामित्याह गर्भो ह्येष | |
| 521 | T.A.8.6.9 | मतिर्ह्येष कवीनाम् सम् देवो | |
| 522 | T.A.8.6.10 | नाभिर्दशमी प्राणानेव यजमाने दधाति | |
| 523 | T.A.8.6.11 | रुचितमवेक्षन्ते रुचिताद्वै प्रजापतिः प्रजा | |
| 524 | T.A.8.6.12 | अधीयन्तोऽवेक्षन्ते सर्वमायुर्यन्ति न पत्यवेक्षेत | |
| 525 | T.A.8.7.1 | देवस्य त्वा सवितुः प्रसव | |
| 526 | T.A.8.7.2 | मनुष्यनामैरेवैनामाह्वयति षट्थु सम्पद्यन्ते षड्वा | |
| 527 | T.A.8.7.3 | स्वयैवैनम् देवतयोपावसृजति अश्विभ्याम् प्रदापयेत्याह | |
| 528 | T.A.8.7.4 | ब्रह्म वै देवानाम् बृहस्पतिः | |
| 529 | T.A.8.7.5 | तस्मादिन्द्रो देवतानाम् भूयिष्ठभाक्तमः गायत्रोऽसि | |
| 530 | T.A.8.7.6 | घर्मम् पात वसवो यजता | |
| 531 | T.A.8.7.7 | स्वाहा त्वा सूर्यस्य रश्मये | |
| 532 | T.A.8.7.8 | अन्तरिक्षेण त्वोपयच्छामीत्याह अन्तरिक्षेणैवैन-मुपयच्छति न | |
| 533 | T.A.8.7.9 | सुवरसि सुवर्मे यच्छ दिवं | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|--|--|
| 534 | T.A.8.7.10 | पाङ्गो यज्ञः यावानेव यज्ञः | |
| 535 | T.A.8.7.11 | अप्सु वै वरुण आदित्यवान् | |
| 536 | T.A.8.7.12 | तस्मा एवैनञ्जुहोति एताभ्य एवैनम् | |
| 537 | T.A.8.8.1 | विश्वा आशा दक्षिणसदित्याह विश्वानेव | |
| 538 | T.A.8.8.2 | अश्विना घर्मम् पातः हार्दिवान-महर्दिवाभि-रूतिभिरित्याह | |
| 539 | T.A.8.8.3 | पूर्वमेवोदितम् उत्तरेणाभिगृणाति अनु वान्-द्यावापृथिवी | |
| 540 | T.A.8.8.4 | दिक्ष्वेवैनम् प्रतिष्ठापयति देवान् घर्मपान् | |
| 541 | T.A.8.8.5 | यत् प्रत्यक् तन्-मनुष्याणाम् यदुदङ्कु | |
| 542 | T.A.8.8.6 | तेजसोऽस्कन्दाय इषे पीपिहूर्जे पीपिहीत्याह | |
| 543 | T.A.8.8.7 | ब्रह्मन्नेवैनम् प्रतिष्ठापयति नेत्त्वा वातः | |
| 544 | T.A.8.8.8 | ताभ्य एवैनञ्जुहोति प्रतिरेभ्यः स्वाहेत्याह | |
| 545 | T.A.8.8.9 | रुद्राय रुद्रहोत्रे स्वाहेत्याह रुद्रमेव | |
| 546 | T.A.8.8.10 | चक्षुरस्य प्रमायुकः स्यात् तस्मान्नान्वीक्ष्यः | |
| 547 | T.A.8.8.11 | यद्-यजुषा जुहुयात् अयथापूर्वमाहुती जुहुयात् | |
| 548 | T.A.8.8.12 | प्राणो वा इन्द्रतमोऽग्निः प्राण | |
| 549 | T.A.8.8.13 | सम्वथ्सरन्न माऽसमश्जीयात् न रामामुपेयात् | |
| 550 | T.A.8.9.1 | घर्म या ते दिवि | T.A.7.11.1 |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|---|--|
| 551 | T.A.8.9.2 | एष्वेव लोकेषु प्रजा दाधार | |
| 552 | T.A.8.9.3 | प्राञ्चमुद्वासयति तस्मादसावादित्यः पुरस्तादुदेति शफोपयमान्धवित्राणि | |
| 553 | T.A.8.9.4 | यज्ञश् रक्षाश्सि जिघाश्सन्ति साम्ना | |
| 554 | T.A.8.9.5 | यत् पृथिव्यामुद्वासयेत् पृथिवीश् शुचाऽर्पयेत् | |
| 555 | T.A.8.9.6 | अमृत एवैनम् प्रतिष्ठापयति वल्गुरसि | |
| 556 | T.A.8.9.7 | इयं वा ऋतम् तस्या | |
| 557 | T.A.8.9.8 | अनशनायुको भवति य एवं | |
| 558 | T.A.8.9.9 | वृषा हरिः महान्-मित्रो न | |
| 559 | T.A.8.9.10 | पूर्वमेवोदितम् उत्तरेणाभिगृणाति धियो हिन्वानो | |
| 560 | T.A.8.9.11 | मनुष्यो हि एष सन्-मनुष्यानुपैति | |
| 561 | T.A.8.10.1 | प्रजापतिं वै देवाः शुक्रम् | |
| 562 | T.A.8.10.2 | तथ् साम्नः पयः यदजायै | |
| 563 | T.A.8.10.3 | तेजः प्रवर्ग्यः तेजसैव तेजः | |
| 564 | T.A.8.10.4 | तस्मा-दुत्तरवेद्या-मेवोद्वासयेत् प्रजानाम् गोपीथाय पुरो | |
| 565 | T.A.8.10.5 | यम् द्विष्यात् यत्र स | |
| 566 | T.A.8.10.6 | इदमह-ममुष्यामुष्यायणस्य शुचा प्राणमपि दहामीत्याह | |

| SNo | Dasini | Beginning Words | Other Dasini beginning with same Words |
|-----|------------|--|--|
| 567 | T.A.8.11.1 | प्रजापतिः सम्प्रियमाणः सम्राट्थु सम्भृतः | |
| 568 | T.A.8.11.2 | यो वै वसीयाꣳ सम्यथानाममुपचरति | |
| 569 | T.A.8.11.3 | प्रियेण नाम्ना समर्द्धयति कीर्तिरस्य | |
| 570 | T.A.8.11.4 | वसवः प्रवृक्तः सोमोऽभिकीर्यमाणः आश्विनः | |
| 571 | T.A.8.11.5 | असौ खलु वावैष आदित्यः | |
| 572 | T.A.8.11.6 | तस्मादश्नुते प्रजापतिर्वा एष द्वादशधा | |
| 573 | T.A.8.12.1 | सविता भूत्वा प्रथमेऽहन् प्रवृज्यते | |
| 574 | T.A.8.12.2 | यथ-षष्ठेऽहन्-प्रवृज्यते ऋतुर्-भूत्वा सम्वत्सरमेति यथ-सप्तमेऽहन्-प्रवृज्यते | |
| 575 | T.A.8.12.3 | यदेकादशेऽहन्-प्रवृज्यते इन्द्रो भूत्वा त्रिष्टुभमेति | |